शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 दिसंबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी साहित्य में आदिवासी जीवन

डॉ. राजेश मिश्र
(हिन्दी विभाग)
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध संक्षेप

भाषा बोलियों की खाद पर साहित्यिक विधाओं के बहुरंगे फूल खिलाती है। इस प्रयास में वह अपने शब्द, भाव और संवेदना के विकास तथा संस्कार के लिए देशज.बोलियों और आंचलिक परिवेश की ओर उन्मुख होती है। हिन्दी भाषा इस दृष्टि से कहीं अधिक समृद्ध और संपन्न है। इसके केंद्र से परिधि के पार तक की संस्कृति, परिवेश, जीवन और रहन-सहन, इसे दूसरी भाषाओं की तुलना में कहीं अधिक ठोस आधार प्रदान करती है। भाषा की यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे साहित्य में उतर कर उसके अभिजात्य संस्कारों को देशज-वैभव और लोक-जुड़ाव की गहरी अनुभूतियों से जोड़ देता है। रचनाकारों की अभिजात्य रचनात्मकता, लोक.जीवन के आनुभूतिक सौन्दर्य को आत्मसात करके साहित्य में सौन्दर्यबोध का एक ऐसा संश्लिष्ट रूप तैयार करती हैं जो अब तक के सौन्दर्यबोध से अलग विशेष और अपने समय से आगे का साबित होता है।

प्रस्तावना

आदिवासी कथा लेखन हमारे समकालीन साहित्य को एक बहुत बड़े आयाम से जोड़ रहा है, जहाँ उपेक्षित तिरस्कृत और असभ्य मान ली गयी आदिवासियों की जीवन संवेदना को साहित्य की मुख्य धारा में शामिल करने का प्रयास प्रतिफलित हो रहा है। हिन्दी का कथा लेखन भी आदिवासी लोक जीवन की संवेदना से अनायास नहीं जुड़ गया है। हिन्दी साहित्य वर्तमान समय में आदिवासी अंचल को उसकी तमाम अनुभूतियों और संवेदनाओं के साथ उद्घाटित और व्याख्यायित कर रहा है। अपने अस्तित्व की लडाई में आदिवासी जनजातियां, सभ्य समाज के बीच आज भी बहुत कुछ हार रही हैं। जल, जंगल और जमीन की लडाई तो राजनैतिक स्तर पर है, शोषण सामाजिक स्तर पर, इन सब के साथ.साथ सभ्यता, संस्कृति, परिवेश और रहन-सहन के बदलाव को साहित्य गहरे से महसूस कर रहा है। जीवन के कई क्षेत्रों से एक साथ जुड़ी उनके अस्तित्व की यह लड़ाई उन्हें संघर्ष में अकेला करते जा रही है। उनके धान का उचित मूल्य न देकर, उसे गोदाम में सडाकार शराब बनाकर सस्ते दामों में उन्हीं को पिला दिया जाता है, जिससे उनको सोचने के लिए समय ही न मिले और सरकारी विकास कार्य होते रहें। नक़्शे दर नक़्शे वे जंगलों में सिमटते जा रहे हैं। उन्हें खदानों में मजदूर बनाकर उन्हीं से उनकी संपत्ति ले ली जा रही है। टमाटर सडकों पर कुचल रहे किसान, कर्ज के कारण आत्महत्या कर रहे हैं। उनके रोजमर्रा का यह संघर्ष उनकी दिनचर्या में इस कदर शामिल है कि वे इसी को जीवन मान बैठे हैं। 'अग्निगर्भ' और 'परजा' जैसे कथानक इन सभी सामाजिक दुर्घटनाओं के सच को बखूबी सामने रखते हैं।

Scanned with CamScanner